मधुर–मधुर मेरे दीपक जल–

महादेवी वर्मा

छायावाद की प्रमुख कवयित्री ‘ महादेवी वर्मा

मधुर-मधुर मेरे दीपक जल ' शीर्षक कविता छायावाद की प्रमुख कवयित्री ' महादेवी वर्मा ' द्वारा रचित है। कवयित्री इस कविता के माध्यम से परमात्मा से मिलन की उत्कट इच्छा व्यक्त करती है। इस कविता में दीपक आस्था का प्रतीक है। कवयित्री अपने आस्था रूपी दीपक को जलाकर अपने प्रियतम (परमात्मा) का पथ आलोकित करना चाहती है। वह परमात्मा से एकाकार होना चाहती है। वह अपने तन के कण-कण को मोम की भाँति गलाना चाहती है। वह नहीं चाहती कि विश्ववासी प्रभुभक्ति और प्रभुकृपा से वंचित रहें , इसलिए वह अपनी भक्ति और आस्था की रोशनी चारों ओर फैलाना चाहती है ताकि सारा विश्व आस्थावान होकर प्रभुकृपा प्राप्त कर सके। वह प्रकृति के अनेक उदाहरण भी प्रस्तुत करती है। वह कहती है कि सागर का हृदय , आकाश के अनगिनत तारे और बादल में विद्यमान बिजली सभी प्राकृतिक उपादान भी नित्य प्रति जलते रहते हैं। समस्त विश्ववासी का हृदय भी ईर्ष्या और घृणा की आग में जलता रहता है , किंतु कवयित्री उन्हें ईश्वर भक्ति का मार्ग दिखाना चाहती है ताकि सबका कल्याण हो।

मधुर मधुर मेरे दीपक जल

युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल

प्रियतम का पथ आलोकित कर

धूप के समान सुगन्ध बिखेर

कवयित्री के मन में ईश्वर के प्रति अगाध विश्वास है। इसी आस्था और विश्वास के सहारे वह अपने प्रियतम की भक्ति में लीन हो जाना चाहती है। महादेवी जी अपने हृदय अथवा अंतर्मन में स्थित आस्था रूपी दीपक को संबोधित करती हुई कहती है कि तुम लगातार जलते रहो , हर पल, हर घड़ी , हर दिन , हर समय, युग-युग तक जलते रहो ताकि मेरे परमात्मा रूपी प्रियतम का पथ सदा तुम्हारे प्रकाश से जगमगाता रहे। भाव यह है कि आस्था कभी न टूटे , विश्वास रूपी दीप कभी न बुझे तथा ईश्वर भक्ति के लिए मेरा यह दीप सतत जलता रहे।

सौरभ फैला विपुल धूप बन ,
मृदुल मोम-सा घुल रे मृदु तन ;
दे प्रकाश का सिंधु अपरिमित ,
तेरे जीवन का अणु गल-गल !
पुलक-पुलक मेरे दीपक जल !

अपने मन के बाद , कवयित्री अपने तन की ओर देखती है और कहती है कि ओ मेरे तन ! तू बहुत विशाल धूप बन जा। जिस प्रकार धूप और अगरबत्ती स्वयं जलकर समस्त विश्व को सुगंध से भर देते हैं, ठीक उसी प्रकार मेरा यह शरीर भी विशाल धूप बनकर निरंतर जले और समस्त संसार को अपने सत्कर्मों की सुगंध से भर दे। आगे कवयित्री अपने तन को कोमल मोम के समान बनाकर निरंतर जलते हुए (यानी प्रभुभक्ति करते हुए) अपने अहंकार को पूरी तरह मिटा देने की बात कहती है। इस प्रकार तन रूपी मोम के जलने से और अहंकार के पिघलने से ऐसा प्रकाश का सागर फैले कि जिसमें जीवन का एक-एक अणु के समान अहंकार गलकर समाप्त हो जाए। अरे मेरे विश्वास एवं आस्था रूपी दीपक ! तू प्रसन्नतापूर्वक लगातार जलता रह। इस प्रकार कवयित्री संपूर्ण तन-मन से प्रभु-भक्ति में लीन हो जाना चाहती है।

सारे शीतल कोमल नूतन ,
माँग रहे तुझसे ज्वाला कण
विश्व-शलभ सिर धुनता कहता ‘ मैं
हाय न जल पाया तुझ में मिल ’।
सिहर-सिहर मेरे दीपक जल !

कवयित्री कह रही है कि आज संपूर्ण विश्व में ईश्वर के प्रति आस्था का अभाव है। यहाँ कवयित्री ने नूतन , शीतल उन प्राणियों को कहा है , जिनके मन में ईश्वर-भक्ति नहीं है और प्रभु की आस्था की चिंगारी नहीं है। इसलिए सारे नए कोमल प्राण आज ईश्वर की आस्था की ज्योति ढूँढ रहे हैं , किंतु कहीं न पाकर वे तुझसे (कवयित्री के विश्वास रूपी दीपक से) आस्था की चिंगारी माँग रहे हैं ताकि उनके हृदय में भी ईश्वर-भक्ति और ईश्वर के प्रति आस्था के दीप प्रज्ज्वलित हो जाएँ यह जग रूपी पतंगा पश्चाताप करता हुआ कहता है कि हाय ! यह मेरा दुर्भाग्य है कि मैं इस प्रेम-भक्ति की लौ में जलकर अपने अहंकार को न मिटा सका। जब तक जीव का अहंकार न मिटता तब तक परमात्मा के साथ जीवात्मा का मिलन नहीं होता। अतः जग रूपी पतंगे को आत्माहुति देने के लिए कवयित्री अपने आस्था रूपी दीपक को सिहर-सिहर जलने के लिए कहती है।

जलते नभ में देख असंख्यक ,
स्नेहहीन नित कितने दीपक ;
जलमय सागर का उर जलता ,
विद्युत ले घिरता है बादल !
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल !

आकाश में अनगिनत तारों को देखकर कवयित्री को ऐसा लगता है कि वे सब स्नेहरहत हैं , उनमें आस्था रूपी तेल नहीं है। वे भी ईश्वर से मिलने को टिमटिमाते हुए जल रहे हैं अर्थात संसार के वे लोग जिनमें ईश्वर के प्रति भक्ति नहीं है। वे स्नेहरहित हैं और ईर्ष्या तथा द्वेष की अग्नि में जल रहे हैं। अपार जलराशि से पूर्ण सागर का जल जब गर्म हो जाता है , तब भाप बनकर बादल बन जाता है अर्थात लोग आज सांसारिक ऐश्वर्य से परिपूर्ण होकर भी अशांत हैं और ईश्वर-भक्त प्राप्त करने को जल रेहे हैं। बादल भी कड़कती बिजली के साथ आकाश में घनघोर घटा के रूप में दिखाई देते हैं। वे भी ईश्वर से मिलने को जल रहे हैं। इस तरह प्रकृति के सभी उपादान ईश्वर से मिलने को अपने में ईश्वर- भर्क्ति की आग जलाए हुए हैं। इसलिए कवयित्री अपने आस्था रूपी दीपक को हँसते-हँसते जलने को कह रही है क्योंकि सभी जल रहे हैं। उसे किसी मज़बूरी में नहीं जलना है;बल्कि प्रसन्नतापूर्वक जलना है ताकि संसार के अशांत लोगों को परमात्मा का पथ दिखाकर उन्हें परम शांति दिला सकें।

मधुर–मधुर मेरे दीपक जल–

प्रियतम का पथ आलोकित कर!!

- **सिहर सिहर मेरे दीपक जल!**

पुलक पुलक मेरे दीपक जल!

विहँस विहँस मेरे दीपक जल!